झारखंड के लोकनृत्य

झारखंड के लोकनृत्य

1. छऊ नृत्य :–

- इस नृत्य का जन्म स्थान सरायकेला (झारखंड) है ।
- यही से यह नृत्य मयूरभंज (उड़िसा) एवं पुरूलिया (पश्चिम बंगाल) मे फैला ।
- अभी यह नृत्य सरायकेला , मयूरभंज एवं पुरूलिया जिले का मुख्य लोक नृत्य है।
- यह नृत्य को सरायकेला रियासत का संरक्षण प्राप्त था ।
- यह पुरूष प्रधान नृत्य है ।
- इसका विदेश मे सर्वप्रथम प्रदर्शन 1938 ई. मे सुधेन्दु नारायण सिंह द्वारा किया गया ।
- यह झारखंड का सबसे प्रसिद्ध लोकनृत्य है । इसकी तीन शैलिया सरायकेला , मयूभंज (उड़िसा) तथा पुरूलिया (प.बंगाल) है ।
- ज्ञात हो कि छऊ की सबसे प्राचीन शैली ' सरायकेला छऊ' हैं

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- अपनी विशिष्ट शैली के कारण छऊ नृत्य को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष ख्याति प्राप्त है ।
- झारखंड के खूंटी जिले मे इसकी एक विशेष शैली का विकास हुआ है , जिसे ' सिंगुआ छऊ ' कहा जाता है ।
- यह एक ओजपूर्ण नृत्य है तथा इसमें विभिन्न मुखौटो को पहनकर पात्र पौराणिक व ऐतिहासिक कथाओं का मंचन करते है । इसके अतिरिक्त कठोरवा नृत्य में भी पुरूष मुखौटे पहनकर नृत्य करते है ।
- इस नृत्य मे दो घाराएं है – 1) हतियार , 2) कालीभंग

  1) हतियार मे वीर रस की प्रधानता

  2) कालीभंग मे श्रृगांर रस की प्रधानता

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- 1947 ई. मे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार सरकार ने इस नृत्य को संरक्षण दिया एवं देश–विदेश मे इसके प्रदर्शन की व्यवस्था की ।
- 2000 ई. मे झारखंड के राज्य बन जाने के बाद इस नृत्य के संरक्षण की जिम्मेदारी झारखंड सरकार के हाथ मे आ गई है ।
- इसमें प्रशिक्षक/गुरू की उपस्थिति अनिवार्य होती है ।
- वर्ष 2010 मे छऊ नृत्य को यूनेस्को द्वारा 'विरासत नृत्य ' मे शामिल किया गया है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2. जदुर नृत्य

- इस नृत्य को नीर सुसंको भी कहा जाता है ।
- यह नृत्य कोलोम सिंग–बोंगा पर्व (फागुन) के बाद प्रारंभ होकर सरहुल पर्व (चैत) तक चलता है ।
- इसका प्रदर्शन उराँव जनजाति द्वारा किया जाता है ।
- यह उत्पादन , ऊर्जा तथा मातृभूमि के प्रति आदर का प्रतीक है ।
- यह स्त्री–पुरूष का सामूहिक नृत्य है ।
- इसमें लय–ताल तथा राग के अनुरूप वृताकार पथ पर दौड़ते हुए महिलाएं नृत्य करती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

3. बरू नृत्य

- यह जदुर तथा करमा नृत्य का मिश्रण है ।
- यह नृत्य मागे तथा गेना की ही भांति की जाती है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

4. जपी नृत्य

- यह नृत्य शिकार से विजयी होकर लौटने के प्रतीक के रूप मे किया जाता है ।

- यह सरहुल पर्व (चैत) मे प्रारंभ होकर आषाढी पर्व (आषाढ) तक चलता है ।
- यह मध्यम गति का नृत्य है ,जिसे स्त्री–पुरूष सामूहिक रूप से प्रदर्शित करते है ।
- इस नृत्य के दौरान महिलाएं एक–दूसरे की कमर पकड़ कर नृत्य करती है तथा वादक , गायक व नर्तक पुरूष इन महिलाओं से घिरे होते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

5. करमा/लहुसा नृत्य

- इस नृत्य मे 8 पुरूष/8 स्त्रियां भाग लेते है ।

- यह नृत्य मुख्यतः करमा पर्व के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाता है ।
- इस नृत्य मे पुरूष व स्त्रियां गोलार्द्ध बनाकर आमने–सामने खड़े होते है तथा एक दुसरे के आगे–पीछे चलते हुए नृत्य करते है ।
- यह नृत्य झुक कर किया जाता है ।

- इस नृत्य के दौरान 'लहुसा गीत ' गाया जाता है ।
- इस नृत्य के दो प्रकार खेमटा और भिनसारी है ।

6. जतरा नृत्य

- यह सामुहिक नृत्य है , जो उरांव जनजाति द्वारा किया जाता है ।

- इसमें स्त्री–पुरूष हाथ पकड़कर नृत्य करते है ।
- इसमें वृताकार/अर्द्धवृताकार घेरा बनाकर नृत्य किया जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

7. नचनी नृत्य

- यह पेशेवर नृत्य है ।
- स्त्री और पुरूष कार्तिक पूर्णिमा के दिन विशेष रूप से यह नृत्य करते है
- इस नृत्य मे स्त्री नचनी और पुरूष रसिक के रूप मे होता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

8. नटुआ नृत्य

- यह पुरूष प्रधान नृत्य है ।
- इसमें पुरूषों द्वारा स्त्री वेश घारण करके नृत्य किया जाता है ।

9. पइका नृत्य

- यह एक ओजपूर्ण नृत्य है ।
- इसमे नर्तक सैनिक वेश धारण कर नृत्य करते है ।
- झारखंड के सदानो एवं आदिवासी समुदायो के बारातियो , राजा , मंत्री , गुरू आदि जैसे सम्मानित अतिथियो के स्वागत या शोभा यात्राओं मे इस नृत्य की प्रस्तुती की जाती है ।
- इसमें नर्तक सैनिक वेश धारण करके नृत्य करते है । नर्तको को एक हाथ मे तलवार ओर दूसरे मे शील्ड को संभालना होता है ।
- इनमे नर्तक रंग–बिरंगी झिलमिलाती कलगी लगी या मोर पंख लगी पगड़ी (टोपी) बांधते है ।
- इस नृत्य मे पगड़ी पर कलगी अनिवार्य होता है ।

- यह नृत्य पुरूष प्रधान है । इसलिए इस नृत्य के कलाकारों की भाव–भंगिमा पुरूषोचित होती है , जिसमें वीरता , साहस आदि का प्रदर्शन होता है ।
- यह एक युद्ध नृत्य है तथा यह आदिवासी व सदान दोनो मे प्रचलित है
- यह नृत्य , मुण्डा जनजाति मे सर्वाधिक प्रचलित है ।
- रूस मे हुए भारत महोत्सव मे डा. रामदयाल मुंडा पइका नृत्य की टीम लेकर गए थे । प्रसिद्ध तर्नक अशोक कच्छप का संबंध इसी नृत्य से है

10. नटुआ नृत्य

CAREER FOUNDATION

- यह राज्य के पंचपरगना क्षेत्र का अत्यंत लोकप्रिय नृत्य है । नटुवा नट शब्द से बना है , जिसका अर्थ होता है नाचनेवाला ।
- यह नृत्य श्रृंगार रस और वीर रस का संगम है ।
- यह पुरूष प्रधान नृत्य है ।
- इसमें पुरूषों द्वारा स्त्री वेश धारण करके नृत्य किया जाता है ।

11. कली नृत्य

- इस नृत्य को नचनी–खेलड़ी नाच भी कहते है ।
- इसमें नर्तकी भरपूर श्रृंगार करती है । तथा सर पर मुकुट पहनती है ।
- इसमे भाग लेने वाली नर्तकी (कली) फूल खिलने की सुंदरता को प्रतिविंबित करती है ।
- इस नृत्य मे राधा–कृष्ण प्रेम–प्रसंग के गीतो की प्रधानता रहती है ।
- इस नृत्य मे नगाड़े , ढांक , ढोल , मांदर , शहनाई आदि बजाया जाता है ।

CAREER FOUNDATION जुनून

12. अग्नि नृत्य

- यह एक धार्मिक नृत्य है ।
- यह मण्डा या विपु पूजा के अवसर पर किया जाता है ।
- इसमें शील की पूजा की जाती है

13. मण्डा नृत्य या भगतिया नृत्य

- यह पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है ।
- इस नृत्य मे बच्चे से बूढे तक शामिल होते है ।
- इस नृत्य के दौरान महिलाएं माथे पर लोटा में जल लेकर भगतिया नर्तको के ऊपर आम्र पालवों मे मार्जन करती है ।
- यह पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है ।
- इस नृत्य के दौरान गीत नही गाए जाते बल्कि केवल , ढांक , नगाड़ा ,शहनाई आदि वाद्य यंत्रो का वादन होता है ।
- यह सात्विक भाव के साथ किया जाने वाला कलात्मक नृत्य है ।
- यह भगवान शिव या महादेव पूजा का नृत्य है ।

CAREER FOUNDATION

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

14. माठा नृत्य

यह सोहराई पर्व के समय किया जाने वाला पुरूष प्रधान नृत्य है ।

- उरावं जनजाति मे पुरूषों के साथ–साथ महिलाएं भी इस नृत्य मे भाग लेती है ।
- यह नृत्य सदान और आदिवासी दोनों मे प्रचलित है ।

15. झूमर नृत्य

- यह नृत्य मुख्यतः फसल की कटाई के अवसर पर किया जाता है।
- यह स्त्री प्रधान नृत्य है ।
- जनजातियों द्वारा विवाह तथा अन्य पर्व–त्योहार के अवसर पर भी इस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है।
- यह नृत्य घेरा बनाकर समूह मे किया जाता है ।

झूमर नृत्य के प्रमुख प्रकार

➢ करिया झूमर नृत्य – स्त्री प्रधान नृत्य

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- उधउआ नृत्य – गाढे प्रकृति का झूमर नृत्य
- रसकिर्रा नृत्य – तीव्र गति का झूमर नृत्य
- पहिल सांझ नृत्य – रात के प्रथम पहर मे किया जाने वाला धीमे व मध्यम गति का झूमर नृत्य
- अधरतिया नृत्य – आधी रात के समय तीव्र गति से किया जाने वाला रस से परिपूर्ण झूमर नृत्य
- भिनसरिया नृत्य – आधी रात के समय तीव्र गति से किया जाने वाला रस से परिपूर्ण झूमर नृत्य
- भिनसरिया नृत्य – रात्रि के अवसान के बाद मध्यम गति पर किया जाने वाला झूमर नृत्य

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

16. करिया झूमर नृत्य

- यह स्त्री प्रधान नृत्य है ।
- इस नृत्य मे महिलाएं एक–दूसरे के हाथ मे हाथ डालकर घूम–घूमकर नृत्य करती है ।

17. मरदानी झूमर नृत्य

- यह पुरूष प्रधान नृत्य है ।
- इसमें नृत्य के साथ गायक भी होता है ।
- इस नृत्य के दौरान एक गीत गाने वाला समूह ओजपूर्ण गीत गाते है।

18. ठड़िया नृत्य

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- यह झूमर की तरह का ही नृत्य है ।
- इस नृत्य मे सीधे खड़ी चाल मे चलते हुए नृत्य किया जाता है ।
- यह स्त्री एवं पुरूष दोनो का नृत्य कहा जाता है ।
- यह स्त्री एवं पुरूष दोनो का नृत्य है ।

19. अंगनई नृत्य

- यह महिला प्रधान नृत्य है , परंतु कभी–कभी इसमे पुरूष भी शामिल हो जाते है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- आधिकांशतः करमा तथा जितिया के दौरान इस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है ।

20. लुझरी नृत्य

- इसमे लुंझकते हुए नृत्य मंडली झूमर नृत्य करती है ।
- इसका प्रयोग स्त्री व पुरूष दोनो के द्वारा झूमर के दौरान किया जाता है
- यह अंगनई की एक शैली है तथा इसे लुझकउआ नृत्य भी कहा जात है

21. डंइड़धरा नृत्य

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- यह पुरूष प्रधान झूमर नृत्य है जिसका प्रदर्शन मरदाना झूमर के दौरान किया जाता है ।
- इस नृत्य में नर्तक एक–दूसरे की कमर पकड़ कर जुड़ जाते है तथा कतारबद्ध होकर हाथ , पैर व शरीर से विभिन्न प्रकार के लोच , लय , ताल व राग के अनुरूप नृत्य करते है ।

22. कठोख नृत्य

- यह पुरूष प्रधान नृत्य है ।
- इसमें पुरूष मुखौटा पहनकर नृत्य किया जाता है ।

23. मुंडारी नृत्य

- यह नृत्य मुण्डा जनजाति मे प्रचलित है ।
- इसमें रंग–बिरंगी पोशाक पहनकर नृत्य किया जाता है ।
- इस नृत्य प्रमुख प्रकार जदुर , ओरजदुर चिटिद , जपी ,गेना , छव , बरू , जाली आदि है ।

24. गेना नृत्य

- इस नृत्य मे महिलाएं एक–दूसरे की कमर पर हाथ रखकर कतार मे जुड़कर नृत्य करती है ।
- यह विजय के उत्साह का प्रतीक है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

25. जापी नृत्य

- यह स्त्री–पुरूष का सामूहिक नृत्य है ।
- इस नृत्य के दौरान , नर्तक , वादक तथा गायक पुरूष व स्त्रियों से घिरे रहते है ।

- इस नृत्य के दौरान पुरूष गायकों के गीतो की अंतिम कड़ी को महिलाएं गाती है ।
- यह शिकार से विजयी होकर लौटने का प्रतीक गीत नृत्य है ।

26. चिहिद नृत्य

- यह महिला प्रधान नृत्य है ।
- लहसना जुड़े हाथों की मुद्रा तथा कदमों की विशिष्टता इस नृत्य की विशेषता है ।
- इस नृत्य के दौरान गायन भी किया जाता है ।
- इस नृत्य का प्रदर्शन करम व जरगा के अखरा मे होता है ।
- यह नृत्य उपासना का नृत्य है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

27. मागे/माघे नृत्य

- यह नृत्य हो जनजाति मे प्रचलित है ।
- यह एक सामूहिक नृत्य है ,जिसमें महिला व पुरूष दोनो भाग लेते है।
- यह नृत्य माध पूर्णिमा को किया जाता है ।
- इसमे नृत्य करने वालो के बीच गाने व बजाने वाले धिरे होते है ।

28. लांगड़े नृत्य

- यह संथाली जनजाति का लोकनृत्य है ।
- यह नृत्य किसी भी खुशी या उत्सव के अवसर पर किया जाता है ।

29. गौंग नृत्य

- यह नृत्य हो जनजाति मे प्रचलित है ।

30. बाहा नृत्य

CAREER FOUNDATION

- यह नृत्य संथाली जनजाति द्वारा बाहा पर्व (सरहुल) के समय किया जाता है ।
- इस नृत्य मे साल एवं महुआ फूलो को प्रयोग किया जाता है ।

31. बा नृत्य

- यह हो जनजातियों का एक प्रमुख नृत्य है ।
- यह नृत्य सरहुल के अवसर पर किया जाता है ।
- इस नृत्य मे स्त्री तथा पुरूष सम्मिलित होकर सरहुल पर्व के समय गायन व नृत्य करते है ।

32. डाहर नृत्य

- यह नृत्य संथाली जनजाति द्वारा यह नृत्य सड़को पर किया जाता है।
- इस नृत्य मे पुरूष तथा महिला सामूहिक रूप से भाग लेते है ।
- यह नृत्य के दौरान मांदर , नगाड़ा , तुरही , ढांका , घंटी , आदि बजाया जाता है ।
- यह नृत्य गांव के अखरा मे ही किया जाता है ।
- इस लांगड़े नृत्य भी कहा जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

33. दसंय नृत्य

- यह संथाल जनजाति मे प्रचलित दशहरा पर्व के समय किया जाने वाला पुरूष प्रधान नृत्य है ।
- इस नृत्य के दौरान पुरूष महिलाओं की वेश–भूषा धारण करके नृत्य करते है ।
- इस नृत्य के दौरान मृतक लोगो के घर जाकर उनके आंगन मे नाचने है तथा अन्न प्राप्त करते है ।
- यह नृत्य दशहरा के प्रथम दिन से विजयादशमी तक किया जाता है।
- इस नृत्य के दौरान करताल बजाया जाता है ।

34. डोमकच नृत्य

- इस नृत्य का प्रदर्शन विवाह क अवसर पर किया जाता है तथा विवाह के ही वर या कन्या के घर के आंगन मे रात्रि मे किया जाता है ।
- यह मूलतः स्त्री प्रधान नृत्य है तथा इसमें महिलाओं के दो दल होते है। एक दल गीत उठाता है तो दूसरा दल उन गीतो की कड़ियो को दोहराता है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- यह नृत्य परिवार या पड़ोस के सदस्य मिलकर घर आंगन मे ही करते है ।
- इस नृत्य के कई भेद है जैसे –जशपुरिया , असमिया , झुमटा आदि।

35. घोड़ा नृत्य

- इस नृत्य का आयोजन मेले , त्योहारो व बारात के स्वागत के समय किया जाता है ।
- इस नृत्य के दौरान नर्तक बांस के पहिए से बिना पैर के घोड़े की आकृति बनाकर नृत्य करता है ।
- नृत्य के दौरान बाएं हाथ से घोड़े की लगान तथा दांये हाथमे दोधरी तलवार पकड़े होते है ।
- नागपुरी क्षेत्र मे पाण्डे दुर्गानाथराय घोड़ा नृत्य हेतु प्रसिद्ध थे ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

36. हेरो नृत्य

- इस नृत्य का आयोजन धान की बुआई के बाद किया जाता है ।
- इसके दौरान महिला एवं पुरूष सम्मिलित रूप से पारंपरिक वाद्ययंत्रो के साथ गायन व नृत्य करते है ।

37. जरगा नृत्य

- यह नृत्य माध माह मे किया जाता है ।
- इस नृत्य की प्रमुख विशेषता पद संचालन है ।
- इसमें महिलांए सामूहिक रूप से नृत्य करती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

38. ओरजरगा नृत्य

- यह नृत्य जरगा नृत्य के साथ–साथ किया जाता है ।
- इसमें महिलाएं तीव्र गति से नृत्य करती हुयी वर्गाकार घुमती है तथा इनके मध्य गायक , वादक व नर्तक पुरूष होते है ।

39. सोहराई नृत्य

- इस नृत्य का आयोजन पालतू पशुओं के लिए किया जाता है ।
- इस नृत्य के दौरान गोशाला मे पूजा की जाती है ।
- इस नृत्य का प्रदर्शन सामान्यतः दीपावली के दूसरे दिन किया जाता है।
- नृत्य के दौरान महिलाओं के द्वारा चुमावड़ी गीत गाया जाता है ।
- इस नृत्य के दौरान पुरूष गांव जमाव गीत गकर नाचते है ।
- इस नृत्य के दौरान नर्तको का दल घर–घर जाकर आंगन या चौराहे व रास्ते पर नृत्य करते है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

40. टुसू नृत्य

- यह महिला प्रधान नृत्य है ।
- महिलाएं मकर सक्रांति के अवसर पर टूसू के प्रतीक 'चौड़ाल' को प्रवाहित करती है । इस अवर पर वे सामूहिक रूप से यह नृत्य करती है ।

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

महत्वपूर्ण नृत्य से संबंधित महीने

जदुर नृत्य	फागुन– चैत (सरहुल)
करमा नृत्य	आषाढ – भादो , कार्तिक
माघ पर्व	कार्तिक – फागुन
जपी नृत्य	चैत आषाढ
सोहराय	कार्तिक

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का